

पराली प्रबंधन का रोहतास मॉडल

चर्चा में क्यों?

हाल ही में बिहार कृषि विश्वविद्यालय द्वारा पराली प्रबंधन के **रोहतास मॉडल** को पूरे राज्य में लागू करने का नरिणय लयिा गया है ।

प्रमुख बढिु

- रोहतास मॉडल के तहत स्ट्राबेलर नामक मशीन की सहायता से उच्च दबाव पर पराली का कंप्रेसड बंडल बनाया जाता है । इस बंडल को डेयरी समतियिों को बेचा जाता है, जहाँ इसका प्रयोग चारे के रूप में कथिा जाता है । इससे न केवल कृषकों को अतरिकित आय की प्राप्ति होती है, बल्कि पशुपालकों की चारे संबंधी समस्या का समाधान होने से पशुपालन एवं दुग्ध उत्पादन को बढावा मलिता है ।
- उल्लेखनीय है कि कृषि विज्ञान केंद्र, रोहतास के इस पराली प्रबंधन मॉडल को मई 2021 में **इको-एग्रीकल्चर अवॉर्ड, 2021** से सम्मानति कथिा गया है ।
- इसके अतरिकित राज्य कृषि विभाग द्वारा पराली से बायोचार बनाने के प्रयास भी शुरू कर दये गए हैं, जिसके तहत पराली को वशेष भट्ठी की सहायता से लगभग **360°C** तापमान पर जलाकर बायोचार खाद का नरिमाण कथिा जाएगा ।
- गौरतलब है कि उत्तर भारत में पराली का प्रबंधन अत्यंत जटलि समस्या है । दरअसल प्रत्येक वर्ष कसिानों द्वारा फसल अवशेषों (पराली) को जलाने से विभिन्न प्रकार की पर्यावरण एवं स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं, उदाहरण के लयि दलिली एनसीआर में शीत ऋतु में स्मॉग की समस्या । ऐसे में पराली प्रबंधन के रोहतास मॉडल को पूरे बिहार राज्य में वसितारति करना महत्त्वपूर्ण कदम है ।